C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×4)(1×1)=[9]

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामनेवाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचार करके बोलना चाहिए।

1. ईश्वर ने मनुष्य को कौन-सी बड़ी देन दी है?
2. बोलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
3. मनुष्य के विचार अर्थ-पूर्ण कब होगे?
4. मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन क्या है?
5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=[6]

तुम कुछ न करोगे तो भी विश्व चलेगा ही,
फिर क्यों गर्वीले बन लड़ते अधिकारों को?
सो गर्व और अधिकार हेतु लड़ना छोड़ो,
अधिकार नहीं, कर्तव्य भाव का ध्यान करो!
है तेज वही, अपने सान्निध्य मात्र से जो
सहचर-परिचर के आँसू तुरत सुखाता है,
उस मन को हम किस भाँति वस्तुतः सु-मन कहें,
औरों को खिलता देख, न जो खिल जाता है?
काँटे दिखते हैं जब कि फूल से हटता मन,
अवगुण दिखते हैं जब कि गुणों से आँख हटे;
उस मन के भीतर दुख कहो क्यों आएगा ;
जिस मन में हों आनंद और उल्लास डटे!
यह विश्व-व्यवस्था अपनी गति का लाभ उठा देखो,
व्यक्तित्व तुम्हारा यदि शुभ गति का प्रेमी हो
तो उसमें विभु का प्रेरक हाथ लगा देखो!

1. कवि अधिकारों की चिंता न करने और कर्तव्य-भाव का ध्यान करने के लिए क्यों कह रहा है?
2. 'तेज' और 'सुमन' के क्या लक्षण बताए गए हैं?
3. दुख कैसे मन के भीतर प्रवेश नहीं कर पाता और क्यों?

खण्ड ख

प्र. 3. साधारण वाक्य किसे कहते है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 1+1=[2]

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x3=[3]

(क) सौमिता खाना खाई और चली गई। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

(ख) जब आप द्वार पर बैठे तब उसकी प्रतीक्षा करें। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

(ग) श्रेयसी बीमार थी अत: स्कूल नहीं आई। (सरल वाक्य में बदलिए)

प्र. 5. (क) निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए: 1+1=[2]

अठन्नी, राधा-कृष्ण

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए: 1+1=[2]

दुरात्मा, नीलगाय

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए: 1x4=[4]

(क) मुझे बहुत आनंद आती है।

(ख) वह धीमी स्वर में बोला।

(ग) उसकी अक्ल चक्कर खा गई।

(घ) उस पर घड़ों पानी गिर गया।

प्र. 7. निम्नलिखित मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए: [2]

मन लगाना, मस्तक नवाना

खण्ड ग

प्र. 8 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+1=[5]

क) कलकत्तावासी अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

ख) छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

ग) तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

प्र. 8 ब लेखक रवीन्द्र केलकर के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए। [5]

प्र. 9 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+1=[5]

क) मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

ख) कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

ग) कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ रखी हैं?

प्र. 9 ब कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों? [5]

प्र. 10. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए। [5]

खण्ड घ

प्र. 11. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए: [5]

'जहाँ चाह वहाँ राह'

'कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण'

निरक्षरता एक अभिशाप

प्र. 12. रुपये मँगवाने के लिए पिताजी को पत्र लिखिए। [5]

प्र. 13. सोसायटी में गंदगी न करने से संबंधित सूचना तैयार करें। [5]

प्र. 14. महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें। [5]

प्र. 15. घी के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए: [5]

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी B

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×4)(1×1)=[9]

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामनेवाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचार करके बोलना चाहिए।

1. ईश्वर ने मनुष्य को कौन-सी बड़ी देन दी है?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है।

2. बोलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए।

3. मनुष्य के विचार अर्थ-पूर्ण कब होगे?

   उत्तर : मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे।

4. मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन क्या है?

   उत्तर : वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए?

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'वाणी का सदुपयोग' उचित शीर्षक है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2x3=[6]

तुम कुछ न करोगे तो भी विश्व चलेगा ही,
फिर क्यों गर्वीले बन लड़ते अधिकारों को?

सो गर्व और अधिकार हेतु लड़ना छोड़ो,
अधिकार नहीं, कर्तव्य भाव का ध्यान करो!
है तेज वही,अपने सान्निध्य मात्र से जो
सहचर-परिचर के आँसू तुरत सुखाता है,
उस मन को हम किस भाँति वस्तुतः सु-मन कहें,
औरों को खिलता देख, न जो खिल जाता है?
काँटे दिखते हैं जब कि फूल से हटता मन,
अवगुण दिखते हैं जब कि गुणों से आँख हटे;
उस मन के भीतर दुख कहो क्यों आएगा ;
जिस मन में हों आनंद और उल्लास डटे!
यह विश्व-व्यवस्था अपनी गति का लाभ उठा देखो,
व्यक्तित्व तुम्हारा यदि शुभ गति का प्रेमी हो
तो उसमें विभु का प्रेरक हाथ लगा देखो!

1. कवि अधिकारों की चिंता न करने और कर्तव्य-भाव का ध्यान करने के लिए क्यों कह रहा है?

   उत्तर : कवि कहता है कि यदि एक व्यक्ति कुछ न करे तो भी विश्व तो चलता ही रहेगा फिर अपने घमण्ड में अधिकारों के लिए क्यों लड़ना अगर कुछ पाना है तो कर्तव्य भाव रखो अधिकारों की लड़ाई छोड़ों।

2. 'तेज' और 'सुमन' के क्या लक्षण बताए गए हैं?

   उत्तर : तेज वही सही होता है जिसके पास आने मात्र से अपनों के दुःख दूर हो जाते हैं अर्थात् आसूँ सूख जाते हैं और सुमन जो खुद खिले औरों को भी खिलने दे अर्थात् अपना मन सुंदर स्वच्छ रखे।

3. दुख कैसे मन के भीतर प्रवेश नहीं कर पाता और क्यों?

   उत्तर : यदि मन में ख़ुशी हो उल्लास हो तो उस मन में दुःख कभी प्रवेश नहीं कर पाता।

खण्ड ख

प्र. 3. साधारण वाक्य किसे कहते है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 1+1=[2]

उत्तर : जिस वाक्य में केवल एक ही उद्देश्य व मुख्य क्रिया हो, वह साधारण वाक्य कहलाता है। जैसे - उदाहरण : अमर पुस्तक पढ़ रहा है।

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x3=[3]

(क) सौमिता खाना खाई और चली गई। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

(ख) जब आप द्वार पर बैठे तब उसकी प्रतीक्षा करें। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर : मिश्र वाक्य

(ग) श्रेयसी बीमार थी अत: स्कूल नहीं आई। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : श्रेयसी बीमार होने के कारण स्कूल नहीं आई।

प्र. 5. (क) निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिए: 1+1=[2]

अठन्नी, राधा-कृष्ण

उत्तर : अठन्नी - आठ आनों का समूह - द्विगु समास

राधा-कृष्ण - राधा और कृष्ण - द्वंद्व समास

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए:1+1=[2]

दुरात्मा, नीलगाय

उत्तर : दुरात्मा - बुरी आत्मा वाला; कोई दुष्ट - बहुव्रीहि समास

नीली है जो गाय - नीलगाय - कर्मधारय समास

प्र. 6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए: 1x4=[4]

(क) मुझे बहुत आनंद आती है।

मुझे बहुत आनंद आता है।

(ख) वह धीमी स्वर में बोला।
वह धीमे स्वर में बोला।

(ग) उसकी अक्ल चक्कर खा गई।
उसकी अक्ल चकरा गई।

(घ) उस पर घड़ों पानी गिर गया।
उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

प्र. 7. निम्नलिखित मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए: [2]

मन लगाना, मस्तक नवाना

1. मन लगाना : कोई काम लगन से करना, रुचि पैदा होना।
मनन ने दसवीं की परीक्षा की तैयारी मन लगाकर की थी।
2. मस्तक नवाना : सिर झुकाना।
परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए सभी छात्रों ने देवी सरस्वती माँ के आगे मस्तक नवाया।

खण्ड ग

प्र. 8 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+1=[5]

क) कलकत्तावासी अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तर : कलकत्तावासी अपने-अपने मकानों व सार्वजानिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर अपनी देशभक्ति का प्रमाण, राष्ट्रीय झंडे का सम्मान तथा देश की स्वंत्रतता की ओर संकेत देना चाह रहे थे।

ख) छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर : छोटे भाई ने टाइम टेबिल बनाते यह सोचा कि वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा और अपने बड़े भाई साहब को शिकायत

का कोई मौका न देगा परन्तु उसके स्वच्छंद स्वभाव के कारण वह अपने ही टाईम टेबिल का पालन नहीं कर पाया क्योंकि पढ़ाई के समय उसे खेल के हरे-भरे मैदान, फुटबॉल, बॉलीबॉल और मित्रों की टोलियाँ अपनी ओर खींच लेते थे।

ग) तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

उत्तर : तताँरा-वामीरो एक लोक कथा है। यह देश के उन द्वीपों की कथा है जो आज लिटिल अंदमान और कार-निकोबार नाम से जाने जाते हैं। निकोबारियों का मानना है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे।

प्र. 8 ब लेखक रवीन्द्र केलकर के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए। [5]

उत्तर : लेखक के अनुसार सत्य वर्तमान है। उसी में जीना चाहिए। हम अक्सर या तो गुजरे हुए दिनों की बातों में उलझे रहते हैं या भविष्य के सपने देखते हैं। इस तरह भूत या भविष्य काल में जीते हैं। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। हम जब भूतकाल के अपने सुखों एवं दुखों पर गौर करते हैं तो हमारे दुख बढ़ जाते हैं। भविष्य की कल्पनाएँ भी हमें दुखी करती हैं। क्योंकि हम उन्हें पूरा नहीं कर पाते। जो बीत गया वह सत्य नहीं हो सकता। जो अभी तक आया ही नहीं उस पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। वर्तमान ही सत्य है जो कुछ हमारे सामने घटित हो रहा है। वर्तमान ही सत्य है उसी में जीना चाहिए।

प्र. 9 अ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+1=[5]

क) मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मीराबाई की भाषा शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसके साथ ही गुजराती शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। पदावली कोमल, भावानुकूल व

प्रवाहमयी है। मीराबाई के पदों में भक्तिरस है। इनके पदों में अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का प्रयोग हुआ है। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। इनके पदों में माधुर्य गुण प्रमुख है और शांत रस के दर्शन होते हैं।

ख) कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

उत्तर : यह तोप हमारी विजय और आज़ादी के प्रतीक के रूप में एक महत्त्व की वस्तु बन गई है। भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है। इससे शहीद वीरों की याद दिलाई जाती है ताकि लोगों के मन में राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा मिले।

ग) कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ रखी हैं?

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने देशवासियों से अपना सर्वस्व न्योछावर करने की अपेक्षाएँ रखी है।

प्र. 9 ब कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों? [5]

उत्तर : कवि ने तालाब की तुलना दर्पण से की है क्योंकि तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ व निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दोनों ही पारदर्शी, दोनों में ही व्यक्ति अपना प्रतिबिंब देख सकता है। तालाब के जल में पर्वत और उस पर लगे हुए फूलों का प्रतिबिंब स्वच्छ दिखाई दे रहा था। काव्य सौंदर्य को बढ़ाने के लिए, अपने भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ऐसा रूपक बाँधा है।

प्र. 10. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए। [5]

उत्तर : टोपी हिंदू धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम। परंतु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। उनकी मीठी पूरबी बोली उसे बहुत अच्छी लगती थी। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। अत: दोनों का रिश्ता जाति और धर्म से परे प्यार के धागे से बँधा था यहाँ पर लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जब रिश्ते प्रेम से बँधे होते है तो तब धर्म, मजहब सभी बेमानी हो जाते हैं।

खण्ड घ

प्र. 11. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए: [5]

'जहाँ चाह वहाँ राह'

प्रत्येक व्यक्ति के मन में किसी न किसी लक्ष्य को पाने की कामना रहती है। कई बार हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल होते हैं और अक्सर इसका दोष हम दुर्भाग्य को देते है। हमारी असफलता के दोषी हम खुद है, हमें हार माने बिना दृढ़ इच्छा और योजना के साथ फिर लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। असफलता सफलता की सीढ़ी है, हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए कि यह असंभव है।

नेपोलियन के अनुसार असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है। मनुष्य को स्थिर इच्छाशक्ति को बनाए हुए, अंतिम साँस तक अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

अँग्रेजी भाषा में भी कहा जाता है, Where there Is a wIll, there Is a way'' पाणिनी, संस्कृत भाषा के महान वैयाकरण जब बच्चे थे और उसकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए उसकी माँ उन्हें शिक्षक के यहाँ ले गई, शिक्षक ने कहा उनकी हथेली में शिक्षा के लिए कोई रेखा नहीं है उन्होंने अपने हाथ में चाकू से रेखा खीची और उस शिक्षक के पास गए। यह देखकर शिक्षक

ने कहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति से कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसीलिए कहते है - 'जहाँ चाह वहाँ राह'।

'कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण'

हमारे भारतीय समाज में नारी को नारायणी कहा गया है। नारी को देवी का दर्जा दिया गया। कहा गया है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही नारी को 'गृह देवी या 'गृह लक्ष्मी' कहा जाता है। प्राचीन समय में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। परंतु मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गयी। उसका जीवन घर की चारदीवारी तक सीमित हो गया। नारी को परदे में रहने के लिए विवश किया गया।

आज वर्तमान युग में नारी पुरुष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है।

नर और नारी एक सिक्के के दो पहलु की तरह है। स्त्री-पुरुष जीवन-रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ साथ स्त्री का भी शिक्षित होना जरुरी है। यदि माता सुशिक्षित होगी तो उसकी संतान भी सुशील और शिक्षित होगी। शिक्षित गृहणी पति के कार्यों में हाथ बँटा सकती है, परिवार को सुचारु रूप से चला सकती है।

आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। परंतु स्त्री पुरुष एक समान के नारे लगाने के बावजूद समाज में नारी का शोषण हो रहा है। स्त्रियों को पुरुष से कम वेतन दिया जाता है। साथ ही पुरुष प्रधान में समाज में अपनी योग्यता के बावजूद आगे बढ़ने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

साथ ही घर की सभी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है, बच्चों की देखभाल और सास-ससुर की सेवा अलग से करनी पड़ती है। इस के लिए पुरुषों को आगे बढ़कर उसकी मदद करनी चाहिए, उसकी कामयाबी के लिए उसे सराहना चाहिए।

नारी का योगदान समाज में सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन,पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। अतः नारी

को कभी कम नहीं आँकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए। नारी त्याग और ममता की मूर्ति है उसे सम्मान और प्यार मिलेगा तो निश्चित वह हमें बेहतर भविष्य प्रदान करेंगी।

निरक्षरता एक अभिशाप

निरक्षरता मानव जीवन में एक अभिशाप है। निरक्षर नागरिक किसी भी देश के लिए अभिशाप होते हैं। अशिक्षित होना एक अभिशाप है, देश के मस्तक पर कलंक है।

निरक्षरता के कारण देशवासियों को घोर संकटों का सामना करना पड़ा है, चाहे वे सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो अथवा वैयक्तिक हो। शिक्षा के अभाव में न हम अपना व्यापार ही बढ़ा सके और न ही औद्योगिक क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति कर सके। जमींदारों, सूदखोरों ने निर्धन किसानों का शोषण उनकी निरक्षरता का लाभ उठाकर ही किया। पीढ़ियाँ बीत जाती थीं, किंतु कर्जे से मुक्ति नहीं मिलती थी विश्व में साक्षरता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 17 नवंबर, 1965 को आठ सितंबर का दिन विश्व साक्षरता दिवस के लिए निर्धारित किया था। 1966 में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था और तब से हर साल इसे मनाए जाने की परंपरा जारी है. साक्षरता दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य आम जनता को साक्षर होने के लाभों से अवगत कराना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत के लिए निरक्षरता को एक अभिशाप माना और आजादी के 60 साल के बाद भी हम इस अभिशाप से मुक्ति पाने में पूरी तरह से असफल रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ने-लिखने और हिसाब-किताब करने की योग्यता प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि हमें नवसाक्षरों में नैतिक मूल्यों के प्रति आदरभाव रखने की भावना पैदा करना होगी।

आज विश्व आगे बढ़ता जा रहा है और अगर भारत को भी प्रगति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलना है तो साक्षरता दर में वृद्धि करनी ही होगी। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक उत्थान

के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में दुर्बल, निसहाय, अंधविश्वासी आदि दुर्भावनाओं से ग्रसित हो जाता है।

निरक्षरता के अभिशाप को दूर करने के लिए कोई उम्र या समय की सीमा नहीं होती इसलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में अक्षर ज्ञान प्राप्त कर नया उजाला लाना चाहिए। हम अपने देश का कल्याण करना चाहते हैं, तो प्रत्येक देशवासी का शिक्षित होना आवश्यक है।

प्र. 12. रुपये मँगवाने के लिए पिताजी को पत्र लिखिए। [5]

कमरा नं 221
छात्रावास
दिल्ली पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली -110022
दिनाँक 3-05-2016

पूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। सभी की कुशलता जानकर प्रसन्नता हुई। मैं मन लगाकर पढ़ाई कर रहा हूँ। अर्धवार्षिक परीक्षा में मुझे 90 प्रतिशत अंकों के साथ कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। मैं वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे कुछ सहायक पुस्तकों की आवश्यकता है तथा अगले महीने शुल्क भी जमा करना है। इस सबके लिए मुझे 3000 रुपये की आवश्यकता है। आप कृपया उक्त राशि भिजवा दें। मैं पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखता हूँ। दीदी व माताजी को प्रणाम। शेष कुशल।

आपका पुत्र,
अभिषेक

प्र. 13. सोसायटी में गंदगी न करने से संबंधित सूचना तैयार करें।

सूचना

गौतम गोविंद

आनंद नगर

दिनाँक : 4 अप्रैल 200-

सभी रहिवासियों को सूचित किया जाता है कि आए दिन सोसायटी परिसर में कूड़ा ही कूड़ा नजर आता है। इमारत की सीढ़ियों में भी रहिवासियों के जूते-चप्पल, गमले, कूड़ादान आदि सभी बाहर ही नजर आते हैं इस कारण सोसायटी के सौंदर्य पर बड़ा ही बुरा असर पड़ रहा है। अत: सभी को सूचित किया जाता है कि अपने घर के बाहर पड़ा सभी सामान जल्द-से-जल्द हटा लें। साथ ही अपने घरों की बालकनी से किसी भी प्रकार का कूड़ा और कचरा बाहर न फेंकें अन्यथा जुर्माने के रूप में हर बार 500 रुपए वसूले जाएँगे।

आदेशानुसार

चेयरमैन

बेनी माधव चंदेला

प्र. 14. महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें। [5]

सब्जीवाला : क्या चाहिए मेडम?

महिला : प्याज।

सब्जीवाला : छोटे या बड़े

महिला : दोनों के क्या दाम है?

सब्जीवाला : छोटे २५ रु. और बड़े २० रु. किलो

महिला : दो दिन पहले तो मैंने छोटे प्याज २० रु. में खरीदे थे।

सब्जीवाला : आप सही कह रही है परंतु आज मार्केट में प्याज के दाम बढ़ गए है।

महिला : आप ठीक भाव लगा देना, मैं दूसरी सब्जी भी लेनेवाली हूँ।

सब्जीवाला : देखते है, और क्या दूँ?

महिला : आलू कैसे?

सब्जीवाला : २० रु. किलो

महिला : १ किलो देना

सब्जीवाला : ये लीजिए।

महिला : अब ठीक हिसाब कर दो।

सब्जीवाला : ठीक है मैडमजी।

प्र. 15. घी के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए: [5]

सरस घी

रखिए अच्छी सेहत की नींव,

खाईए सरस घी